

## दूसरा पहलू... भारतवंशी वैज्ञानिक अमरीका में होते हैं सफल... विश्वविद्यालयों में हो बेहतर शोध कार्य



डॉ. रमेश  
रलिया  
वैज्ञानिक,  
वॉशिंगटन विवि

वर्ष 1930 में सी.वी. रमन को नोबेल के बाद किसी 'भारतीय' को ये पुरस्कार नहीं मिला है। ऐसा क्यों? हम यदि अमरीका से इसकी तुलना करें तो फर्क साफ नजर आता है। 2015 की विश्व बैंक एवं यूएनईएससीओ रिपोर्ट के अनुसार भारत जीडीपी का 0.63 फीसदी शोध एवं विकास पर खर्च करता है जबकि



अमरीका 2.79 फीसदी। भारत सरकार वैज्ञानिक शोध पर गंभीर तो लगती है, पर बहुत करना बाकी है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अमरीकी वैज्ञानिकों ने फंडामेंटल (मूलभूत) विज्ञान पर काफी शोध किया। सुविधा मिली व राजनीतिक नियंत्रण से मुक्त रखा गया। भारत में शोध ढांचे में

बदलाव हो। भारतीय विवि में आधुनिक लैब, स्टाफ और बजट का अभाव है। डिग्री देने की बजाए शोध पर ज्यादा काम हो। अमरीका के ज्यादातर विवि में अप्लाइड (तुरंत उपयोग में आने वाले) शोध होते हैं। भारत में भी इस दिशा में काम हो। भारत के सरकारी शोध संस्थानों में भी इस दिशा में काम होना चाहिए। साथ ही देश में विश्वविद्यालयों में स्टाफ को परफॉर्मेंस बेस बनाना चाहिए। जैसे कि अमरीका सहित अन्य विकसित देशों में होता है। इससे विज्ञान के प्रति छात्रों में सहज आकर्षण उत्पन्न होगा।